L. N. MITHILA UNIVERSITY
DARBHANGA (BIHAR)
Dr. Pramod Kumar Sah,
Assistant Professor
Guest Teacher
M.S.J. College, Rajnagar
MADHUBANI (BIHAR)
pramodkumarsah2018 @gmail.com

B.A PART- 01
B.A PAPER - 01
PSYCHOLOGY (HONOURS)
Fundamental psychology
TOPIC- (science of mind)

मन का विज्ञान (Science of mind) :-

आत्मा के विज्ञान की उपर्युक्त त्रुटियों के कारण बाद के कुछ मनोवैज्ञानिकों ने इसे मन का विज्ञान कहना अधिक उपयुक्त समझा, लेकिन मनोविज्ञान की यह परिभाषा भी त्रुटिपूर्ण है। क्योंकि आत्मा की तरह ही मन भी एक अस्पष्ट एवं दार्शनिक धारणा (concept) है। जिस प्रकार आत्मा के वास्तविक स्वरूप को मूर्तरूप में अभिव्यक्त नहीं किया जा सकता, उसी प्रकार मन की धारणा को मूर्तरूप में नहीं रखा जा सकती। अतः आत्मा के विज्ञान के संबंध में ऊपर जिन त्रुटियों की चर्चा की गई है वे सभी त्रुटियाँ मन के विज्ञान के संबंध में भी लागू होती हैं।

मनोविज्ञान की उपर्युक्त परिभाषाएँ 19वीं शताब्दी में दी गई थी, उस जमाने में मनोविज्ञान को काल्पनिक दर्शन का एक अंग माना जाता था, तथा इसे फायर साइड साइकोलोजी (Fire side psychology) की संज्ञा दी जाती है अर्थात् जिस प्रकार जाड़े के मौसम में लोग अँगीठी के सामने बैठकर आराम से अपने मन की बातों के संबंध में विचार-विमर्श करते हैं उसी प्रकार आराम से अँगीठी के सामने बैठकर केवल अपने आंतरिक क्रियाओं या भावनाओं पर विचार करके निष्कर्ष निकालना ही मनोवैज्ञानिक अध्ययन के लिए पर्याप्त समझा जाता था, दूसरे शब्दों में वैज्ञानिक तथ्यों को केवल आत्मचिंतन-संबंधी अध्ययन ही माना जाता है। इसलिए किसी प्रकार के प्रयोग की आवश्यकता नहीं थी, उस युग के दार्शनिक वस्तुओं की प्रकृति उसकी क्रियाओं एवं उनके व्यक्तिगत चिंतन पर ही निर्भर करते थे, तथा

उनके आधार पर निकाले गए निष्कर्षों को सत्य मानते थे।

चेतन अनुभूति का विज्ञान (science of conscious experience) 1879 में जर्मनी के लिपजिग विश्वविद्यालय में विलहेल्म वुंट ने पहली मनोवैज्ञानिक प्रयोगशाला की स्थापना की, जिससे मनोविज्ञान में प्रयोग आदि-काल-द्वारा की संभावना बढ़ी, इसके परिणामस्वरूप मनोविज्ञान का दार्शनिक रूप धीरे-धीरे वैज्ञानिक रूप में परिणत होने लगा, इसीलिए मनोविज्ञान के इतिहास में 1879 को सर्वाधिक महत्वपूर्ण वर्ष माना जाता है।

वुंट (Wundt) और उनके शिष्य (Edward Titchener) इत्यादि के मनोवैज्ञानिक हैं इन लोगों ने मनोविज्ञान की एक नई परिभाषा की, इनका मत है कि मनुष्य एक चेतन प्राणी है इसलिए उसके स्वभाव एवं कार्यों को समझने के लिए आवश्यक है कि चेतन मानसिक प्रक्रियाओं के बारे में अध्ययन किया जाए। चेतना की प्रत्येक मानसिक प्रक्रियाएं जैसे संवेदना, प्रतिमा और भाव (Feeling) के विभिन्न प्रकार के तत्वों से बनी हुई होती हैं। इसलिए, इस विचारधारा को संरचनावाद की संज्ञा दी गयी है। इनके अनुसार चेतनानुभूति ही मनोविज्ञान का आलोच्य विषय है। जो इन्हीं तत्वों के योग से बनी है। इनके अनुसार चेतनानुभूति का अध्ययन करने हेतु अंतर्निरीक्षण ही एकमात्र उपयुक्त विधि है। और ये इसी अध्ययन द्वारा प्राप्त सामग्री के आधार पर मनोविज्ञान को चेतन अनुभूति का विज्ञान कहकर पुकारा है। मनोविज्ञान की इस परिभाषा से मनोविज्ञान का स्वरूप बहुत अंशों में स्पष्ट हुआ और हम यह जान पाए कि मनोविज्ञान के अंतर्गत चेतना की उन प्रक्रियाओं का अध्ययन किया जाता है जिनके बारे में प्रयोग करके सत्यात्मक परिणाम निकाले जा सकते हैं। परंतु मनोविज्ञान की यह परिभाषा भी त्रुटिपूर्ण

प्रतीत होती है। क्योंकि

(i) मनोविज्ञान में केवल चेतन अनुभूतियों का ही अध्ययन नहीं किया जाता, बल्कि अवचेतन (sub-conscious) और अचेतन (unconscious) अनुभवों का भी अध्ययन करना मनोविज्ञान का प्रमुख आलोच्य विषय है।

(ii) चेतन अनुभूतियों के बाह्य-प्रकाश व्यवहार (behaviour) का अध्ययन करना भी मनोवैज्ञानिक अध्ययनों के लिए आवश्यक है। अन्यथा मानव-प्रकृति के बारे में प्राप्त ज्ञान अधूरा रह जाएगा।

(iii) इस परिभाषा में भी यह स्पष्ट नहीं किया गया है कि यह विज्ञान है तो किस प्रकार का विज्ञान है। विधायक या आदर्श-निर्धारक

व्यवहार का विज्ञान (Science of Behaviour)

20वीं शताब्दी में स्ट्रक्चरलिस्ट स्कूल के चिंतकों के विचारों के विरुद्ध एक नई विचारधारा का प्रादुर्भाव हुआ, जिसे व्यवहारवाद (Behaviourism) कहते हैं। इस विचारधारा के मानने वालों में वाटसन (Watson) का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इन्होंने 1913 में स्पष्ट रूप से बताया कि चेतन अनुभूति आत्मगत या व्यक्तिगत होती है। जिसे न तो वस्तुगत ढंग से परिभाषित किया जा सकता है न इसका स्थान-निरूपण किया जा सकता और न इसे मापा ही जा सकता है। अतः इसका अध्ययन कर मनोविज्ञान कभी विज्ञान नहीं बन सकता, इसलिए इन्होंने व्यवहार को मनोविज्ञान का आलोच्य विषय माना और इसे व्यवहार का विज्ञान (science of behaviour) कहकर पुकारा तथा इसके अध्ययन के लिए बाह्य निरीक्षण की विधि प्रस्तावित की।

इस प्रकार, हम देखते हैं कि समय के बीतने के साथ-साथ मनोविज्ञान की परिभाषा में क्रमशः सुधार होते गये, जिससे यह फ़लसफ़ा दर्शन (philosophy) से धीरे-धीरे स्वतंत्र विज्ञान के रूप में परिणत हुआ, लेकिन, अब भी मनोविज्ञान का वास्तविक रूप स्पष्ट नहीं हो सका क्योंकि मनोविज्ञान के अंतर्गत केवल व्यवहार का ही अध्ययन नहीं किया जाता,

Scanned with CamScanner

अनुभूतियों का भी अध्ययन किया जाता है। यही कारण है कि व्यवहार और अनुभूति दोनों में से किसी एक पक्ष को अलग नहीं किया जा सकता, क्योंकि दोनों में अन्योन्याश्रय संबंध है। अतः व्यवहार को अनुभूति से अलग कर देने पर व्यवहार निरर्थक हो जाएगा, प्रचलित मनोविज्ञान की परिभाषा में व्यवहार एवं अनुभूति दोनों को सम्मिलित किया जाना उचित होगा, मनोविज्ञान केवल व्यवहारों का अध्ययन करता है और चेतन अनुभूतियों का नहीं ऐसी स्थिति रहने पर मनोविज्ञान का क्षेत्र अत्यंत सीमित हो जाएगा अतः मनोविज्ञान को केवल व्यवहार का विज्ञान कहना उचित नहीं है।

मनोविज्ञान की आधुनिक परिभाषा -

व्यवहारवादियों द्वारा दी गई परिभाषा

व्यवहारवादियों द्वारा दी गई परिभाषा की कमियों को ध्यान में रखकर मनोविज्ञान की आधुनिक परिभाषा दी गई है। आधुनिक काल के मनोवैज्ञानिकों के अनुसार, मनोविज्ञान प्राणी और वातावरण के संबंध अनुभव तथा व्यवहार का अध्ययन करने वाला एक समर्थक विज्ञान है।

(1) मनोविज्ञान एक समर्थक विज्ञान - मनोविज्ञान की इस आधुनिक परिभाषा में यह स्पष्ट रूप से कहा गया है कि यह एक समर्थक विज्ञान है। विज्ञान दो तरह के होते हैं समर्थक विज्ञान और आदर्श - निर्धारक -

by. Pramod Kumar Sahu
Date - 14/09/2020
Sub - Fundamental Psychology